आदमियों की कृपा पाने सभी देवता हुये व्याकुल

प्रकृति में बदलाव कम ही होते है किन्तु अगर समस्त सृष्टि प्रकृति को अपने दिये गए दायित्व के विपरीत कार्य करने को उत्सुक हो जाये तो जगत विचित्रताओं से परिपूर्ण हो जाएगा। अभी हाल ही मे श्रीमदभागवत गीता के चौदहवे अध्याय को के श्लोक 2 को पढ़ा तो अचानक मेरे दिमाग के कबूतरखाने में इस श्लोक के परिणाम अर्थात कार्यान्वयन होने का ख्याल आ गया जहा दुनिया का हर काम उलटा- पलटा होगा। तब की दुनिया कैसी ओर किस प्रकार ही होगी, अगर चिंतन करे तो आप विश्वास नहीं करेंगे, किन्तु करना तो होगा? अभी कुछ दिनों से नर्मदातट पर में देर रात को प्रकाश की विचित्र आभाओं के मध्य देव लोक के देवी देवताओं को नर्मदा के तटों पर ध्यानमग्न, साधनारत, तपस्या करते हुये देख रहा हूँ जो इन्सानों की कृपा पाने के लिए, उनसे वरदान पाने के लिए, उनके दर्शनों के लिए यज्ञ हवन आदि करने में लगे हुये है। असल में भगवान श्रीकृष्ण ने इस श्लोक का अर्थ अर्जुन के समझ रखते समय कहा की मनुष्य प्रकृति के तीन गुण के श्रेष्ठ ज्ञान को धारण कर ले जो सभी ज्ञानों में सर्वश्रेष्ठ है, सभी ज्ञानों का परम ज्ञान है, जिसे जो मनुष्य जान लेता है वह परम सिद्धि को प्राप्त कर लेता है ओर मेरी अर्थात परमात्मा कृष्ण जैसे दिव्य प्रकृति को प्राप्त कर सकता है ओर चमत्कार देखिये नर्मदापुरम के सभी मनुष्य दिव्य प्रकृति को प्राप्त हो परमात्मा हो गए जिनकी कृपा पाने के लिए अब नर्मदापुरम में देवताओं ने देवलोक छोड़ डेरा डाल लिया है, ओर यहाँ नर्मदापुरमवासी सशरीर अंतर्ध्यान होकर अपने-अपने कर्मानुसार विचरण करने लगे है, जैसे अन्तरिक्ष में तारे दिन में दिखाई नही देते लेकिन वही मौजूद होते है, एसा ही प्रभाव इन लोगों का है ओर जितने भी माननीय नेतागण वे सभी पृथ्वी के अलावा सारे लोकों का भ्रमण कर राज कर रहे है।

नर्मदापुरम में अदृश्य यहाँ के निवासी ओर सारे माननीयों जिसमें सांसद, विधायक, सहित जो जनप्रतिनिधि कहलाते है वे ओर उनसे सारे लंगू भंगु ने अपना संसार खुद बनाकर भगवान के दिमाग को चकरघिन्नी कर दिया है ओर अपना कोडवर्ड टालू बना लिया है जिसमें किसी के काम होना नहीं है सब टलना ओर टलते जाना है जबकि प्रजा इसमे बेताल की भांति पेड़ पर उल्टी टंगी रहेगी, यह सोचकर की आज नहीं तो कल उनकी समस्या हल हो जाएगी? यहाँ के माननीय नेताओं ने जल,जमीन,जंगल का सफाया कर दुनिया के समक्ष अपनी बदनामी का ढिंढोरा पीटने वाले पत्रकारों को भी दाँतो तले उंगलिया दबाने के लिए विवश कर अपनी बुद्धि कौशल से जहां दुनिया के कई देश, जापान, रुस, चीन ओर अमेरिका आदि में गगनचुंभी इमारतों को चुनोती देते हुये धरती की गहराइयों में पातालछूती इमारते/भवन बनाकर अपना लोहा मनवा लिया है। पहले यहा माननीय नेताओं की औकात को लेकर दुनियावाले कई छीछालेदार आरोप लगाते थे, अब जबकि इन्होने मकान, दुकान, कारखाने सभी जमीन के भीतर बना दिये ओर साथ ही अस्पताल, स्कूल आदि में भर्ती होने वालों की लंबी कतार देख प्रवेश पर रोक लगाकर शेष जल्द पूरा करने का आश्वासन दे रखा है ओर जो अनाज के लिए गोदाम बनवाई है उनमें सोने चाँदी हीरे जवाहर के ठेर लगा रखे है, इनके खेत-जंगल, नदी पहाड़ सब सोना चाँदी उगल रहे है इसलिए इन्होने फैसला लिया है की जल्द ही इनके देश टालू की उल्टी पुलटी करेंसी सभी देशों में मान्य होगी, इसे लेकर इनकी पत्नियों ने विश्वस्तरीय नेताओं की बैठक बुलाई है, जल्द ही आप यह नामुमकिन को मुमकिन होता देखेंगे।

असल में अदृश रहने वाले लोगों के इस देश की बागडोर महिलाओं के हाथों में आ गई है ओर अब तक जो काम उनके लिए धर्म कर्म हुआ करते थे वे सारे काम पुरुषों को करना पड़ रहा है। इधर महिलाओं ने दादी मूंछ रखना शुरू करदीय है ओर माननीय सहित सभी को घूँघट में काम करने का फरमान जारी कर दिया है, साथ ही पुरुषों को बच्चों को जन्म देने, पालने पोसने सहित उनकी जिम्मेदारी दे रखी है। गाय, भैस, बकरी, गधा ओर ऊंट के दूध पर प्रतिबंध लगा दिया है तथा पूरे देश में चींटी ओर मक्खियों के दूध को अनिवार्यतया उपयोग करने का नियम लागू किया है ताकि हजारो लोग चींटी ओर मक्खियों के दूध की आपूर्ति घर घर करे, इस दूध की मिठाई, आइसक्रीम ,चाकलेट, घी, दही मक्खन आदि भरपूर प्रोटीन के मिलेगा ताकि इनका सेवन करने वाले हाथी सी ताकत पाकर चिंघाड़े। महिलाओं ने कानों को देखने का काम दिया है, कान अब सुनेगे नहीं बल्कि दो दिशाओं में मजे से देख सकेंगे। आदमी अपने पेरो में पगड़ी बंधेगा ओर सिर पर जूते पहनेगा, जैसी व्यवस्थाये कर रखी है तभी यहा का आदमी अदृश्य बना हुआ सब नियमों का पालन कर रहा है।

अब सूरज दिन में गायब रहने लगा है ओर चंद्रमा तारों के साथ चमकते हुये गटरमस्ती करने लगा है किन्तु कई बार रात को सूरज रजनी कहिए या निशा इनसे मिलने आ टपकता है। पानी में आग लगने लगी है ओर आग शीतल पानी जैसे लगने लगी है ओर लोग चुल्लू भर पानी डूबते नहीं बल्कि आग की शीतलता में घंटो स्नान करते है। अब मच्छर आदमी का खून नहीं पीता है बल्कि आदमी मच्छर की सवारी कर पेट्रोल डीजल की बचत के साथ टोलनाकों के टेक्सों की भी बचत करता है। गुरुजन अपने छात्रों को पढ़ाते नहीं बल्कि उनसे पढ़ते है, भीख मांगने वाले भामाशाह है ओर नगरसेठ भीख मांगते नहीं थकते है। अब नदी नीचे की ओर नहीं जाएगी, अब नदी पहाड़ पर चढ़ेगी ताकि नदी को कोई इल्जाम न दे कि नदी नीचे कि ओर आ गई, ओर उस नदी ने पातालचुंभी इमारतों के शहर को जो बड़ी मुसकिल से उल्टा शहर बना, को उजाड़ने का काम किया है, इस प्रकार टालू देश के नर्मदापुरम की महिला राजी कि व्यवस्थाए उलट पलट के ख्यालों से, विचारों से चल रही है। आदमी कि इस माया के भ्रम में देवता आ गए ओर वे आदमी को परम सिद्धि दाता समझ आदमी कि पुजा, उसकी, भक्ति,ओर आराधना करने लगे ताकि ये देवता किसी आदमी को प्रसन्न कर ले ओर आदमी से वरदान प्राप्त कर फिर से देवता जैसे बल ओर सिद्धि प्राप्त कर सके। आदमी कोई नर्मदापुरम से गया नहीं है, बस नरमदपुरम में रहकर अदृश्य हुआ है ओर देवताओं कि पकड़ से बाहर है इसलिए देवता आदमी कि भक्ति में लग गया है , ताकि आदमी के परमता के दर्शन कर मनमाना वरदान पा सके।

आत्माराम यादव पीव वरिष्ठ पत्रकार, श्री जगन्नाथधाम काली मंदिर के पीछे, ग्वालटोली नर्मदापुरम मध्यप्रदेश
मोबाइल 9993376616

गोवर्धन दास बिन्नानी राजा बाबू को परामर्शदाता के रूप में शामिल

भक्ति, धर्म एवं सांस्कृतिक ज्ञान का प्रेरक संस्थान ज्ञानमंदिर, किशनगढ़ (राजस्थान) की कार्यकारिणी की बैठक लोकतंत्र सेनानी, योगाचार्य डॉ. प्रेमसुख सुराणा अजमेर की अध्यक्षता में ज्ञानमंदिर नई कार्यकारिणी का गठन विक्रम संवत 2082 से 2085 के लिए किया गया। इसमें सर्वश्री सी.ए आनंद राठी अध्यक्ष,कृष्णचन्द्र टवाणी महासचिव के अलावा अन्य पदाधिकारियों को मनोनीत किया गया।इसी बैठक में बीकानेर के वरिष्ठ साहित्यकार श्री गोवर्धन दास बिन्नानी %राजा बाबू% को परामर्शदाता के रूप में शामिल किया गया है। बैठक पश्चात महासचिव कृष्णचन्द्र टवाणी ने बताया कि ज्ञानमंदिर की स्थापना सन 1980 में कोटा (राजस्थान) में हुई थी। तब से यह संस्था समाज में श्रेष्ठ संस्कारों के लिए आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक साहित्य के प्रचार-प्रसार द्वारा कृति संकल्प है। आध्यात्मिक अभ्युदय के उद्देश्य से ज्ञानमंदिर द्वारा सन 1997 से ÷अध्यात्म अमृत÷ पत्रिका का प्रकाशन निरंतर किया जा रहा है। जिसका धार्मिक पत्रिकाओं में विशिष्ट स्थान है। वर्तमान में सात हजार परिवार इस आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यक अभियान में जुड़े हुए है।

आस्था और विश्वास का पौराणिक केंद्र मैहर का मां शारदे धाम

हे मातु शारदे, हे मातु शारदे,
ज्ञान रूपिणी मां वर दे वर दे,
कर सकूं मां गुणगान आपका,
अंतस ज्ञान प्रकाश से भर दे।।

भारत की पावन धरा का जो स्वरूप आज है वही कल भी था ,आज भी है और युगों युगों तक रहेगा और यदि कुछ बदला है तो वो है केवल समय और स्थितियां..

सभी दिव्य विभूतियों ने इसी धरा में जन्म लिया और इसे पावन कर अपने अपने स्वरूप में लीन होकर आज हमारे समक्ष मूर्तियों के रूप में विराजित हैं और जब हम तनिक भी चिंतन, मनन और अध्ययन करते हैं तब उनका स्वरूप सहज ही स्पष्ट होकर मुखर हो उठता है ...

आज जब मध्यप्रदेश के बघेलखंड क्षेत्र की मैहर तहसील की मां शारदे का दर्शन करते हैं तो बहुत सारे अनसुलझे से प्रश्न भक्तों के सामने स्वयं सुलझने लगते हैं और भक्त उनके प्रति आस्था और विश्वास की डोर में सहज ही खिंचा चला जाता है इस बात का अनुमान आप मंदिर की भव्यता और ऊंचाई से स्वयं लगा सकते हैं जब किसी भी उम्र का उनका भक्त दस सौ बावन (1052) सीढियां चढ़कर उनका दर्शन कर अपने को धन्य मानते हैं।

मंदिर का स्थापत्य और निर्माण

गोलाकार पहाड़ी पर काटकर बनाया गया रास्ता जो लगभग बीस पच्चीस वर्ष पूर्व केवल पगडंडी ही हुआ करता था और मंदिर के मुख्य द्वार से प्रारंभ हुई सीढियां जिनकी संख्या 1052 है उनसे ही चढ़कर भकगण दर्शन करने जाते थे और साथ ही अपना भोजन पानी भी लेकर सीढियां चढ़ते थे पर अब तो काफी व्यवस्थाएं हो गई हैं।

अब सड़क मार्ग भी सुव्यवस्थित है और साथ ही रोप वे की भी सुविधा है जिनसे आपको सड़क मार्ग पर चलकर लगभग अस्सी छोटी छोटी सीढियां चढ़नी पड़ेगी और यदि रोप वे से जाते हैं तो आप सीधे मंदिर के पीछे ही उतरते हैं और घूमकर आगे आकर मां का दर्शन पा सकते हैं।

ऐतिहासिक दस्तावेजों के आधार पर सन 539(522ई. पू.)चैत्र कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को नृपलदेव ने सामवेदी देवी की स्थापना की थी।

सामवेदी देवी यानी संगीत की देवी यानी मां सरस्वती जिन्हें हम मां शारदे भी कहते हैं और साथ ही प्रसिद्ध इतिहासकार ए. कनिघम द्वारा 9वीं अथवा दसवीं शताब्दी से संबंधित होने का अनुमान लगाया जा रहा है(मां शारदा मंदिर में लिखे शिलालेख के अनुसार)

हालांकि शिलालेख की विशिष्ट लिपि होने के कारण यह बात भी पूरी तरह से स्पष्ट नही है।

इस प्रकार इस पर्वत प्रांत में विराजी मां के दिव्य पौराणिक मंदिर का रहस्य अभी भी अनसुलझा ही है।

वैसे तो मां शारदे की प्रतिमा के ठीक नीचे स्थित शिलालेख भी अपने अंदर अनेक पहेलियों को समेटे हुए है..

त्रिकूट पर्वत के लगभग छः सौ फीट की ऊंचाई पर स्थित

इस मंदिर की मध्यप्रदेश में वही मान्यता है जो उत्तर प्रदेश में मां विंध्यवासिनी माता मंदिर की है

और इस स्थान का नाम मैहर कैसे पड़ा यह हम आपको आगे जाकर बताएंगे

सन 1922 में जैन दर्शनार्थियों की प्रेरणा से महाराजा बृजनाथ सिंह जू देव (महाराजा मैहर) द्वारा मां शारदा मंदिर में जीव बलि को प्रतिबंधित किया गया

(स्थापत्य एवं निर्माण के आंकड़ों की जानकारी

प. मोहनलाल द्विवेदी (वस्तु एवम ज्योतिर्विद) जी के अनुसार साभार)

मंदिर की वर्तमान स्थिति

वर्तमान समय के मंदिर के प्रधान पुजारी श्रीट्रश्री108 श्री देवी प्रसाद महाराज जी का प्रभु मिलन(देहावसान)हो जाने से अब मंदिर की पूजन व्यवस्था इनके पुत्र देखते हैं।

उन्होंने बताया कि यहां माता की आराधना से लोगों को मनवांछित फल की प्राप्ति होती है और यही कारण है कि भारत के कोने कोने से लोग यहां आते और अपनी मन्नत को पूरा होता पाते हैं और अपनी आध्यात्मिक ऊन्नति भी करते हैं और इस प्रकार यहां मां का कोई अनिष्टकारी आराधना नही होती यथा तंत्र विद्या आदि ..

इस प्रकार मैहर माता का वैष्णवी स्वरूप लोगों के अंतर्मन में बसा हुआ है और यहां वर्ष में दो बार पावन नवरात्रि पर लगने वाले मेले में देश भर से श्रद्धालु आते हैं जिनमें ग्रामीण अंचल के श्रद्धालु पैदल या कभी दंड भरते हुए जवारों के साथ पूरे उत्साह से आते हैं और यह भक्ति उत्सव दोनों नवरात्रों में पूर्णिमा तक चलता रहता है और मेले की व्यवस्था और प्रतिदिन की

भी व्यवस्था के लिए मध्यप्रदेश शासन, मां शारदा देवी मंदिर अधिनियम 20,02के अधीन मां शारदा मंदिर की देखरेख वर्तमान में मां शारदा मंदिर समिति द्वारा की जाती है जिसके अध्यक्ष कलेक्टर होते हैं।

मां शारदा देवी मंदिर और उसके विन्यासों का कब्जा, प्रशासन नियंत्रण, तथा प्रबंधन मां शारदा देवी मंदिर प्रबंध समिति में निहित है।

मंदिर में विराजमान देवी का महत्व और उनका श्रृंगार पूजन

मां शारदे मंदिर में विराजी मां शारदे मां सती का ही एक स्वरूप हैं जो पौराणिक कथा के आधार पर इस मान्यता पर आधारित है कि जब ब्रह्मा जी का मानस पुत्र दक्ष प्रजापति भगवान शिव से द्रोह भाव रखने के कारण उन्हें अपने यज्ञ में आमन्त्रित नही करता तब पिता के स्नेह वश बिन बुलाए पहुंची मां सती अपने पति का यह अपमान सहन नही कर पाती और अपनी स्व ऊर्जा से उत्पन्न अग्नि में अपने को आहूत कर लेती है तब भगवान शिव उनकी अर्ध ज्वलित देह को लेकर रौद्र रूप में निकलते है तब जहां जहां उनके अंग गिरे वहां वहां शक्ति पीठ स्थापित हो गए और इसी मान्यता के अनुसार कुछ लोगों का मत है कि मैहर में मां का दाहिना स्तन गिरा था और कुछ लोगों के अनुसार उनका हार गिरा था जिसके कारण लोग इस जगह को माई हार या धीरे धीरे मैहर कहने लगे

इस विषय का सत्य कुछ भी हो पर यह पूर्ण सत्य कि यहां लोगों की आस्था और विश्वास अपनी पूर्णता में है और यही वो विश्वास भाव है जो उन्हें मां के दर तक बार बार ले आता है

मां का श्रृंगार ,पूजन आदि

प्रधान पुजारी जी माता की प्रातिदिन की पूजन ,आरती , भोग अर्पण बड़े ही आध्यात्मिक भाव और मनोयोग से करते हैं और प्रतिदिन का इनका श्रृंगार बड़ा ही भव्य होता है ।

आजकल संचार साधनों के माध्यम से मां के प्रतिदिन के श्रृंगार का भक्तों को सहज ही दर्शन हो जाता है ।

प्रतिदिन ताजे सुंदर पुष्पों से मां की शोभा द्विगुणित हो जाती है चूंकि मां का स्वरूप धूम्र वर्ण होने से उन पर लाल और पीला श्रृंगार ज्यादा शोभित होता है पर मैंने देखा है कि मां की पोशाक में रंगों की कोई ऐसी वर्जना नही है , उन्हें सभी वर्ण की पोशाक पहनाई जाती हैं पर भक्त जन अपनी भेंट मां को अर्पित करते हैं तब वे ज्यादातर लाल ,पीला या बांधनी में तैयार पोशाक या चुनरी होती है और नारियल का प्रसाद होता था पर अब थोड़ा बदलाव आ गया है ।

अब भक्त नारियल लेकर मंदिर तक नही जा सकते ,उन्हें नारियल वहीं परिसर में लगी मशीन में ही तुड़वाना होता है.. और मां का भोग प्रसाद मंदिर समिति की व्यवस्था से मीठे, मेवे , फल और नौवेद्य का लगाया जाता है जो सुबह, दोपहर, शाम और रात्रि को लगाया जाता है फिर रात्रि आरती के पश्चात विश्राम कराया जाता है।

भक्त आल्हा ऊदल की कथा

बुंदेल खंड क्षेत्र के महोबा के पराक्रमी सेनापति आल्हा ऊदल की कथा के बिना तो मां शारदे की कथा अपूर्ण ही रहेगी

कहते हैं कि अमरता का वरदान प्राप्त किए हुए आल्हा ऊदल की कथा जगनित के राजा जगनीक ने आल्हा खंड नामक एक काव्य रचा था उसमें इस वीरों की बावन लड़ाईयों का वर्णन है जिसमें पृथ्वीराज से युद्ध के दौरान ऊदल की वीरगति से दुखित आल्हा ने नाथ पंथ स्वीकार कर वैराग्य धारण कर लिया था और पूर्व से माता के भक्त रहे आल्हा की भक्ति मां के प्रति और बढ़ती गई और आज उनके तन छोड़ने के बाद भी वे सर्वप्रथम मां की पूजा करते हैं इसके प्रमाण स्वरूप मंदिर में रात्रि विश्राम के पश्चात माता की पूजा आरती की हुई मिलती है।

कहते हैं वैज्ञानिकों ने भी इस बात की सत्यता जांचने का प्रयास किया पर वे सफल नहीं हो पाए..

इस विषय में मिले कई साक्ष्य हैं जो लोगों के विश्वास को और पुष्ट करते हैं और यहीं मंदिर के समीप ही आल्हा की कुलदेवी फूलमती का भी मंदिर है और एक बड़ा तालाब भी है और मंदिर से उत्तर की ओर एक किलोमीटर की दूरी पर आल्हा अखाड़ा स्थित है जहां आल्हा का भव्य मंदिर, शिव मंदिर भी है

मंदिर का धार्मिक महत्व

मंदिर शब्द का भाव ही है पवित्रता और अध्यात्म ..

जब हमारी आस्था पवित्र भाव से क्षीण जुड़ जाए तो पत्थर में भी भगवान का अहसास होने लगता है और मां शारदे का मंदिर तो बघेल खंड और बुंदेलखंड वाले निवासियों की आस्था का ऐसा केंद्र है कि लोग यहां अपनी मन्नत के लिए पहले हांथा लगाकर अपनी अर्जी लगाते हैं और फिर अर्जी पूरी होने के बाद मां का आभार करने आते हैं और इस प्रक्रिया में वे अपने बच्चों का मुंडन, कर्णछेदन, विवाह के बाद बधाई देने आदि भावों से वर्ष भर आते रहते हैं और नवरात्र में तो यह महत्व और ही बढ़ जाता है जब माता के भक्त त्रिशूल, बाना से अपने शरीर को छेद कर मां के मंदिर आते है ।

मैने तो ऐसे भी भक्त देखे हैं जिन्होंने अपने शरीर में ही जवारे उगा लिए और नौ दिवस तक वो भक्त केवल तरल पदार्थ ही ग्रहण करते रहे ..

यह धार्मिक आस्था का सबसे बड़ा प्रमाण है।

शहर के अन्य देव स्थल

मैहर भूमि के कण कण में आस्था के दर्शन होते हैं हालांकि अब यह सघन बस्ती वाला एक समृद्ध शहर जो गया है पर फिर भी इसकी धार्मिक धरोहरें आज भी अपनी गाथा कहती हैं उनमें से प्रमुख है

बड़ा अखाड़ा
भदनपुर पहाड़
रामपुर मंदिर
(स्वामी नीलकंठ महाराज की तपोस्थली)
ओईला मंदिर
मैहर किला
गोलामठ मंदिर
(गुरु नानक देव जी का भीआगमन हुआ था गोपालबाग में)
भारत रत्न प. रविशंकर जी ने मदीना भवन में की थी संगीत साधना
मैहर वाद्य वृद्ध
(दुनिया का एकमात्र बैंड)

पद्म विभूषण बाबा अलाउद्दीन खां द्वारा सन1918में स्थापित विश्व का प्रसिद्ध बैंड है और इस बैंड की कल्पना उस्ताद अलाउद्दीन खां द्वारा मैहर रियासत के तत्कालीन महाराजा बृजनाथ सिंह जी जू देव के आग्रह पर अकाल से अनाथ हुए बच्चों को स्वावलंबी बनाने के दृष्टिकोण से की गई थी जिसके बारे में एक समय यह धारणा थी कि ऐसा बैंड पृथ्वी पर और कहीं नहीं है।

उस्ताद अल्लाउद्दीन खान द्वारा निर्मित नलतरंग बंदूक की नाल से बना ऐसा अद्भु वाद्ययंत्र है जो आज भी मैहर बैंड की प्रस्तुतियों में अपना मधुर स्वर बिखेर रहा है।

मैहर बैंड की जानकारी
प. मोहन लाल द्विवेदी
(वस्तु एवम ज्योतिर्विद) जी के अनुसार
साभार

इस प्रकार अनेकानेक विविधताओं से सराबोर मैहर नगर माता रानी की कृपा से पूरे भारत में अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए है और यहां के रहवासियों ने भी उनकी सुविधा का ध्यान रखते हुए भांति भांति की व्यवस्थाएं दी हैं यथा मात्र पांच रुपए में मंदिर प्रांगण में स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था, दवाओं की सुविधा तथा निःशुल्क और सशुल्क ठहरने की व्यवस्थाएं आदि..

यहां पहुंचने के लिए आपको सबसे सुविधाजनक मार्ग रेल मार्ग है और सड़क मार्ग भी और हवाई मार्ग जबलपुर होने से इस मार्ग की दूरी 165किलो मीटर है

अंततः

मार्ग कितना भी जटिल हो पर जहां आस्था होती है वहां रास्ते स्वयं सुगम हो जाते हैं तो आप सभी एक बार मां के धाम में पधारें और यहां की आध्यात्मिक , अलौकिक और प्राकृतिक दिव्य चेतना को अनुभूत करें

जय मां शारदे की

ममता श्रवण अग्रवाल

,,अपराजिता,, साहित्यकार
सतना मध्य प्रदेश
8319087003

माता सेवा के प्रतीक जस-जोत जंवारा : नवरात्रि परब

हमर छत्तीसगढ म नवरात के विशेष महत्व होथे। ए परब के आय म हमर राज के जम्मों देवी मंदिर म उछाह आ जाथे। हमर छत्तीसगढ म देवी माता मन के अलगङ्गअलग नाम अउ पीठ हाथव।जेमन सुग्घर मजा के ऊँचा-ऊँचा पहड़िया म बिराजित हाथव।जईसे कि रायगढ़ के डोकरी दाई,चंदरपुर के चंद्रासैनी,रतनपुर के महामाई,धमतरी

के बिलाई माता, गंगरेल के अंगार मोती, डोंगरगढ़ के बमलाई, बिलासपुर के कालीमाई, रायपुर के बंजारी माता, महासमुंद के खल्लारी माता, दंतेवाड़ा के दंतेश्वरी दाई, प्रमुख माने जाथे। ए देवी मन के विशेष पूजा-आराधना ल हमर राज म राज करईया सामंती राजाङ्गमहाराजा,जमींदार मन करीन।काबर की इही देवी मन ओमन के कुलदेवी के रूप म प्रतिष्ठित रहथ।इही मन के एमन पूजा करय। ए परंपरा हर आज भी हमर छत्तीसगढ़ म जीवंत बने हाथव। अउ जब भी ए नवरात के परब हर आथे। हमर राज के जम्मो शक्ति पीठ मन म ज्योति कलश के स्थापना हो जाथे, जवा हर बोंआ जाथे।

ज्योति कलश अउ जवा ल माता के स्वरूप ही माने जाथे। एकरे पाए के तो जम्मो भक्त मन पूरा नौ दिन ले माता सेवा,जस जंवारा के गीत ल गाङ्गा के माता के सेवा ल करथें।नवरात्रि के पहिली दिन ही ज्योति जलाए जाथे, इही दिन जंवारा ल भी बोंए जाथे। ए बेरा म माता सेवा के जस गीत गाए जाथे।जेमा देवी माता के महिमा म मांदर, झांज,मंजीरा के माध्यम से सुग्घर राग म प्रस्तुत करे जाथे।जेला सुनके दर्शक मन मात जाथें। अउ झुमङ्गझूम के नाचना शुरू कर देथे। ए नवरात्रि म जंवारा के विशेष महत्व होथे,जेला हमर गाँव अंचल म बहुत ही श्रद्धा, विश्वास के साथ मनाए जाथे। ए जंवारा के पाछु म जनमानस मन अपन घरङ्गपरिवार,पुरखा के परंपरा के पालन करथें। ए परंपरा म देवी माता ल अपन कुल देवी के रूप जानथें।जे देवी हर उनकर घरङ्गपरिवार ल सुख, शांति, समृद्धि, अउ

जनङ्गधन के आशीर्वाद देथे। ए जंवारा दु तरह ले मनाए जाथे।

पहिली जंवारा लसेत जवारा कहे जाथे।

दूसर ल मारन जंवारा कहे जाथे। सेत जवारा ह सात्विक होथे जेमा फूल पान,नारियल,नींबू ले पूजा करे जाथे।

अउ मारन जंवारा ल तामसिक कहे जाथे।

जेमा जीवङ्गजंतु के बलि दिए जाथे।

एकर बाद आथे अठवाही अर्थात अष्टमी तिथि म यज्ञ-हवन करे जाथे।जेमा

भूलङ्गचूक के लिए अनुनयङ्गविनय करे जाथे। अठवाही के दिन विशेष महत्व

होथे। ए दिन घर ,मंदिर म विशेष उछाह होथे।आसङ्गपास के हितङ्गप्रीत मन ला न्यौता दिए जाथे।सब जंवारा माता के फुलवारी म नारियल चढ़ाथें। अउ उनकर प्रसाद ,आशीर्वाद प्राप्त करके अपन घर जाथें।नवमी के दिन जंवारा के विसर्जन होथे। ए विसर्जन के बेरा म अब्बड़ माता -सेवा के गीत गाए जाथे।कई झन मनखे मन ल माता भी चढ़ जाथे।तब ए मन साट लेथें। एमा नारियल या फेर कांसी के डोरी होथे जेकर से ए मन ल मारे जाथे।कई झन तो बाना- बरछी घलो ल लेके अपन जीभ हाथ मन ल भी छेदवाथें।जेमा ओमन के आस्था हर झलकथे।अउ ए प्रकार से माता-सेवा, जस-गीत गावत जंवारा माता के विसर्जन करथें।

नवरात्रि के ये परब हर हमर छत्तीसगढ़ के सबले बड़े परब के रूप म मानय जाथे।जेमा जन-समुदाय के मन म आस्था-विश्वास अउ भक्ति हर फरीङ्गफरी झलकथे।

ए परब हर नारी-शक्ति देवी के अराधना आय।जेमा हमन ल चिंतन करे के आवश्यकता हे,नारी के सम्मान उनकर मर्यादा के बात ल भी ध्यान करे के आवश्यकता हे।बिना नारी शक्ति के हमर जीवन अधूरा हे।

नारी हमन के शक्ति? अउ प्रेरणा आय।

नारी सृष्टि के आधार आय।
तभे तो कहे गय हावयङ्ग
जहाँ नारी के सम्मान होथे, वहीं देवता मन के भी वास होथे।

अशोक पटेल आशु
तुस्मा,शिवरीनारायण(छ ग)
9827874578

अपने पैतृक गांव से

हमारे पैतृक गांव में डीप बोरिंग और कुछ कंस्ट्रक्शन का शुभारंभ हुआ है ... अतः पुण्यात्मा अम्मा बाबूजी एवं जेठजी जेठानी जी की छोटकी दुल्हिन होने के नाते इस शुभ अवसर पर ईश्वर वंदना मेरा दायित्व बनता है।

कुछ मीठा हो जाये... चूंकि पकवान बहुतायत से बनाना था अतः मैंने गुलगुला बनाना ही उचित समझा।

मैं जब भी गुलगुला बनाती हूं पुण्यात्मा बाबा की बातें शिद्दत से स्मरण हो आता है। वे अनुशासित कर्मठ दूरदर्शी जिला स्कूल से अवकाश प्राप्त प्रिंसिपल शिक्षाविद थे।उनका कहना था

, जो पढ़ेगा वह आगे बढेगा जो आज भी प्रासंगिक है।

उनका यह सपना सभी पोतियों को भी खूब पढ़ाना है और इनके ससुराल से इसकी सास के हाथों का बना गुलगुला जरुर खाना है।

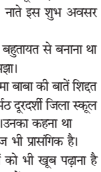

मेरी आ सासु मां के हाथों का बना गुलगुला तो वे नहीं खा पाये क्योंकि उनके परलोक गमन के चार वर्षों के पश्चात मेरा विवाह हुआ लेकिन दीदी लोगों की आ सासु मां..बाबा के सम्मान में अपने हाथों से बनाकर गुलगुले भेजती थी जिसे बाबा बड़ी स्नेह से खाते थे।

खैर, आज से पचपन वर्ष पहले मैं इस घर में व्याह कर आई थी... केन्द्रीय सरकार के अधीनस्थ होने के कारण पूरे भारत में जहां-तहां आर्य पुत्र की पोस्टिंग होती रहती थी... घर-गृहस्थी के झमेलों के अतिरिक्त...नन्हें बच्चों के साथ मेरी अपनी पढ़ाई और नौकरी भी थी... लेकिन हमने कभी भी गांव घर नहीं छोड़ा...न किसी जिम्मेदारी से मुंह मोड़े न बहाना बनाया।

कुछ भी शुरुआत करने से पहले कितने चीज़ों का जुगाड़ करना पड़ता... किसका -किसका मुंह देखना पड़ता है... बहुत अनर्गल प्रसंग झटक देना होता है... तब जाकर सभी को सारी सुख-सुविधाएं प्राप्त होती है।

तत्पश्चात उसका लाभ उठाने वाला मीन-मेख निकाल अपने को श्रेष्ठ साबित करना चाहता है...तब जो सचमुच सारी असुविधा झेलकर परिवार के प्रति समर्पित रहता है..मन ही मन हंसकर रह जाता है।

आज आप सभी के लिए गुलगुला समर्पित है... आनंद उठाइए।

गुरु ईश्वर की कृपा, बड़ों का आशीर्वाद, छोटों का विश्वास और साथ... शुभचिंतकों की मंगलकामनाएं ही अपनी असली पूंजी है... शुभकामनाएं

डॉ उर्मिला सिन्हा, रांची झारखंड